हिन्दी व्याकरण की

class में

ध्वनि

ध्वनि के बिना शब्दों, पदों अथवा वाक्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी भी भाषा में **ध्वनियों** के महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। **ध्वनियों** का समूहन शब्द, पद, वाक्य यहाँ तक कि भाषा है।

वर्णमाला

Syllabary(सिलेबेरी)

लिखित चिह्नों के ऐसे समूह को कहते है
जिसका हर एक चिह्न किसी एक की शब्दांश ध्वनि दर्शाता है

वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ।

च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण।

त थ द ध न।

प फ ब भ म।

य र ल व।

श ष स ह

वर्ण

हिंदी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। यह मूल ध्वनि होती है, इसके और खण्ड नहीं हो सकते।

या

ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहा जाता है |

अक्षर

किसी शब्द की ध्वनियों को परिवर्तित किए बिना उसे कुछ छोटे शब्दांशों मे विभक्त कर दिया जाए तो अक्षर कहलाते है

जैसे :- काम अक्षर (का तथा म) 4 वर्ण

क् ,आ ,म् ,अ

वर्ण तालिका

- **स्वर**
  - **ह्रस्व** — अ, इ, उ, ऋ (4)
  - **दीर्घ** — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (7) = 11
- **व्यंजन**
  - **स्पर्श** — कवर्ग से पवर्ग तथा ड़, ढ़ (25+2) = 27
  - **अंतःस्थ** — य, र, ल, व (4)
  - **ऊष्म** — श, ष, स, ह (4)
  - **आगत** — ज़, फ़ (2)
  - **संयुक्त** — क्ष, त्र, ज्ञ, श्र (4) = 41

- स्वर की संख्या = 11
- व्यंजन की संख्या = 41

52

BY NAVNEET SIR Subscribe KGS TEACHING EXAM

स्वर वर्ण

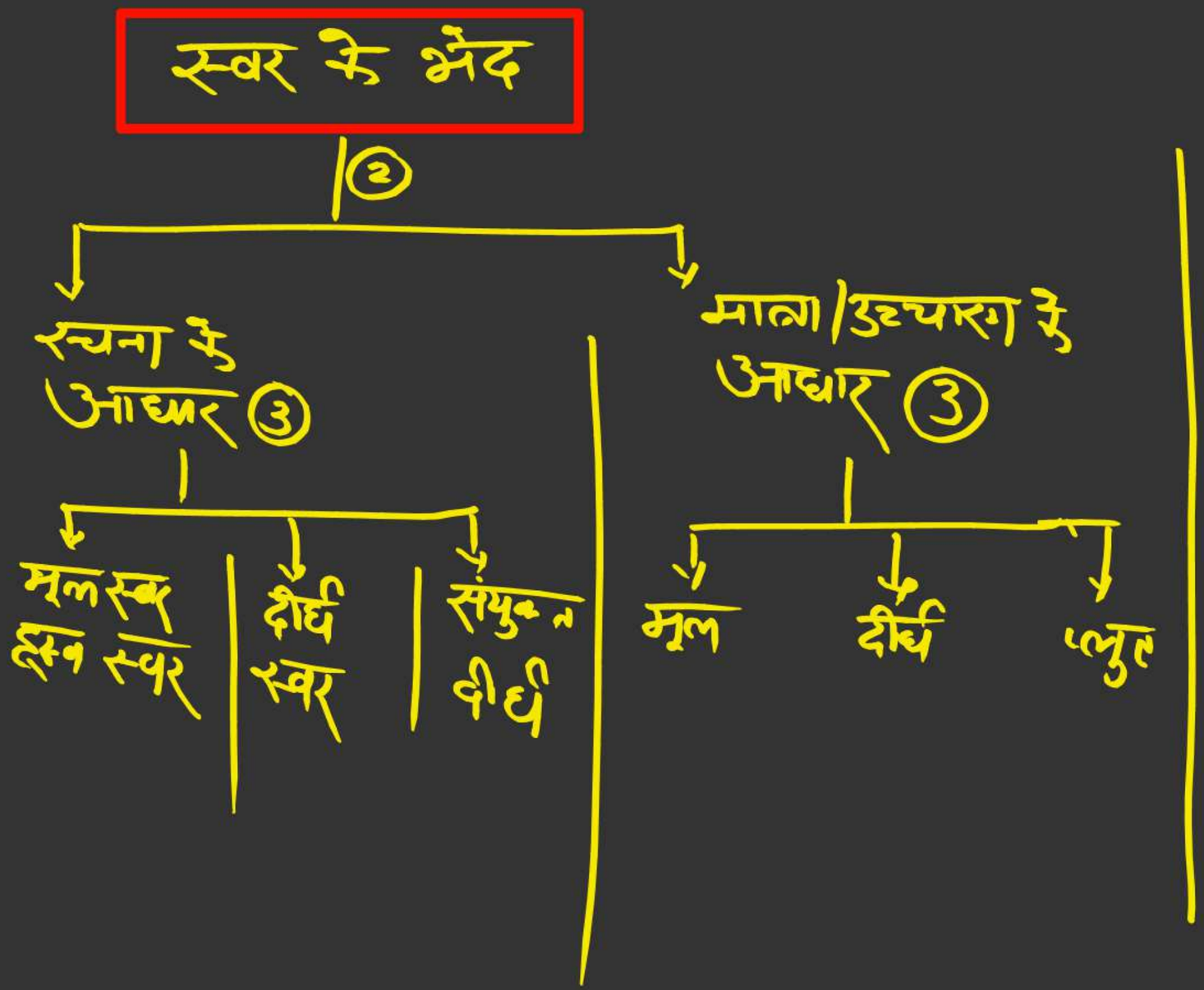

स्वर के भेद

(2)

- रचना के आधार (3)
  - मूल स्वर / ह्रस्व स्वर
  - दीर्घ स्वर
  - संयुक्त दीर्घ
- मात्रा/उच्चारण के आधार (3)
  - मूल
  - दीर्घ
  - प्लुत

स्वर 11

अ आ इ ई उ ऊ

ऋ

ए ऐ ओ औ।

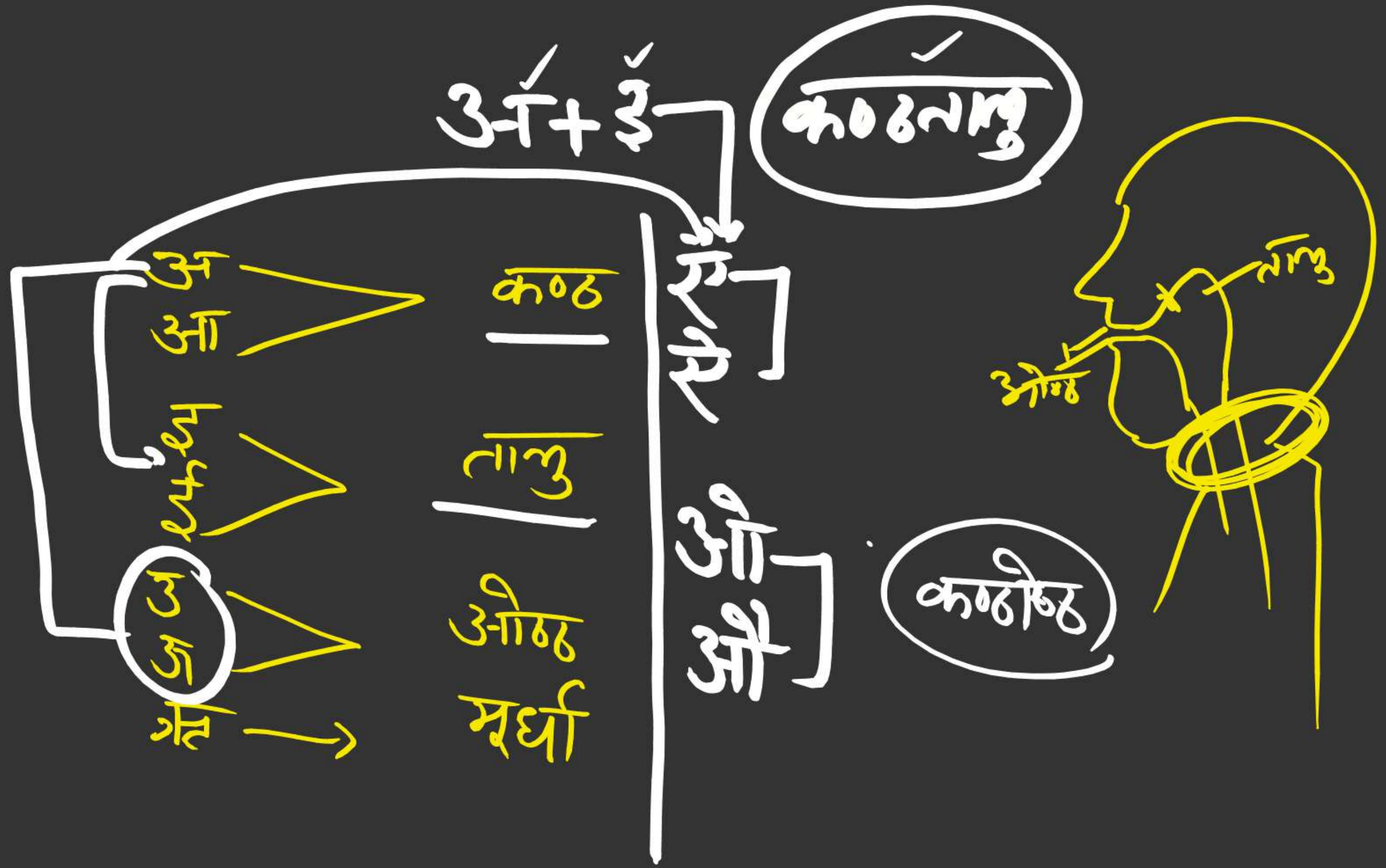

अ/आ + इ/ई → ऐ

कण्ठतालु

अ, आ	कण्ठ
	तालु
उ, ऊ	ओष्ठ
ऋ →	मूर्धा

ऐ, ए → कण्ठतालु

ओ, औ → कण्ठोष्ठ

उच्चारण-

मुख से अक्षरों को बोलना उच्चारण कहलाता है।
वर्णों का उच्चारण मुख के भीतर भिन्न भिन्न
भागों से किया जाता है
जैसे :- जिह्वा ,कंठ ,तालू ,दाँत ,ओष्ठ ,
मूर्धा और नासिका उच्चारण के दौरान
फेफड़ों से आने वाली वायु श्वास नलिका से
बाहर निकलती है यह वायु जहाँ रुकती है
वह उस वर्ण का उच्चारण स्थान होती है

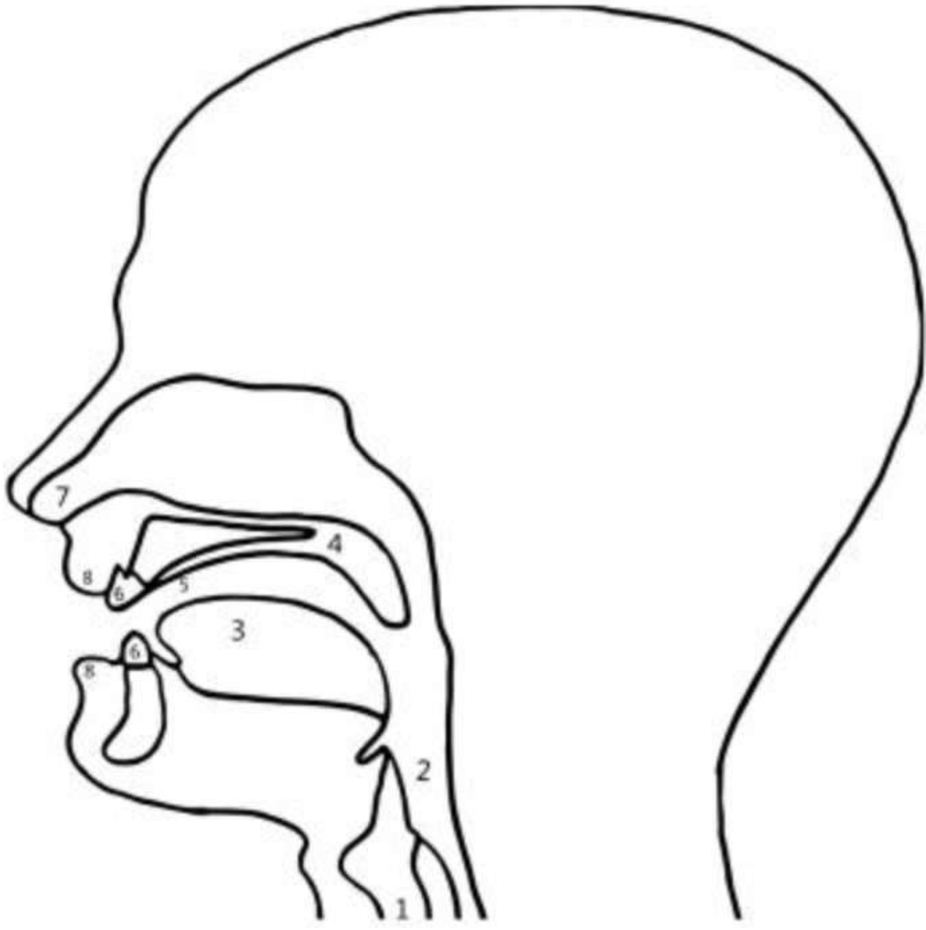

⇒ अ ⇒ शहीद वर्ण

क् + अ = क ✓

क् + आ = का

क + इ = कि

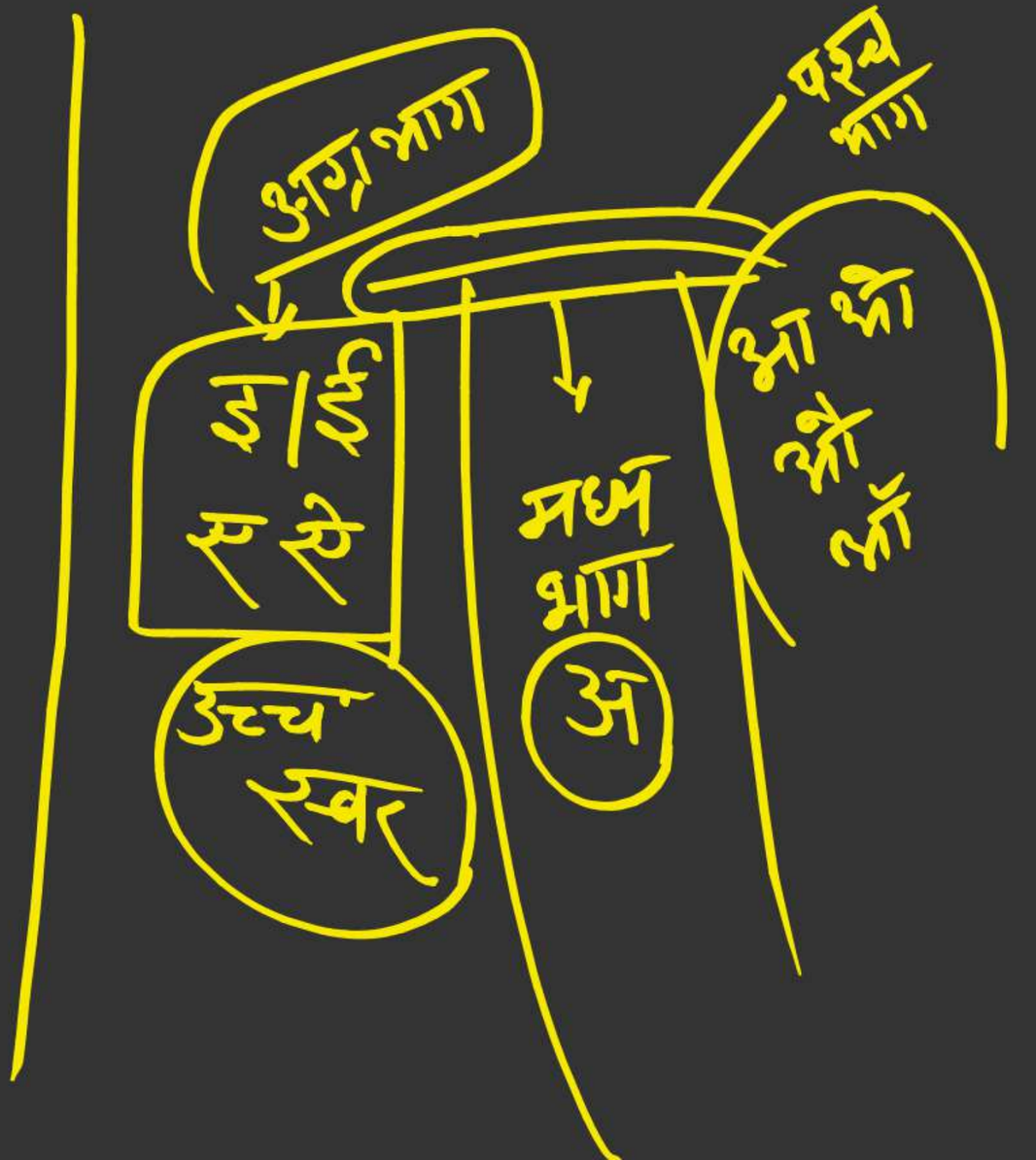

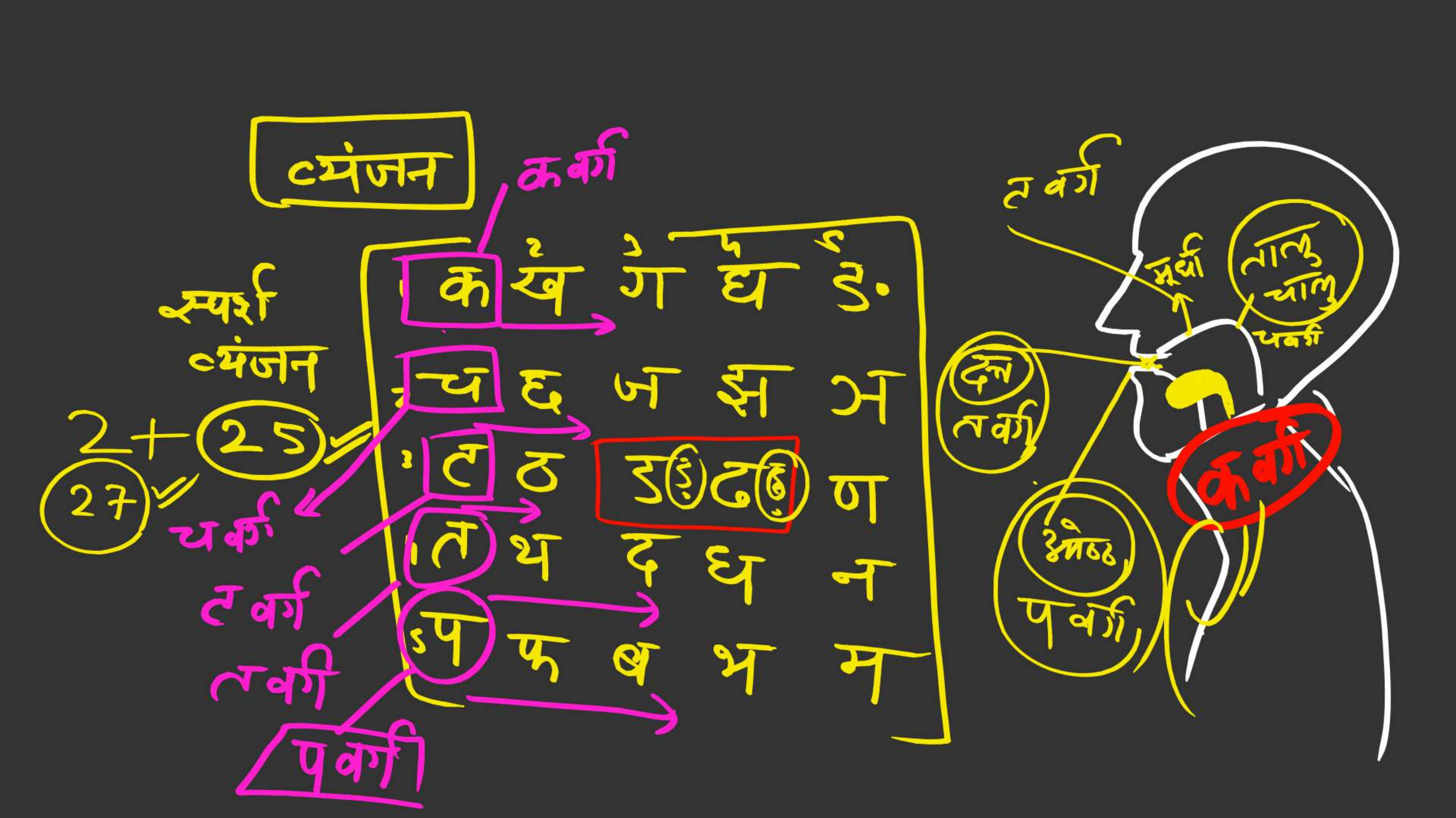

व्यंजन

स्पर्श व्यंजन

2 + 25 = 27

वर्ग					
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड (ड़)	ढ (ढ़)	ण
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म

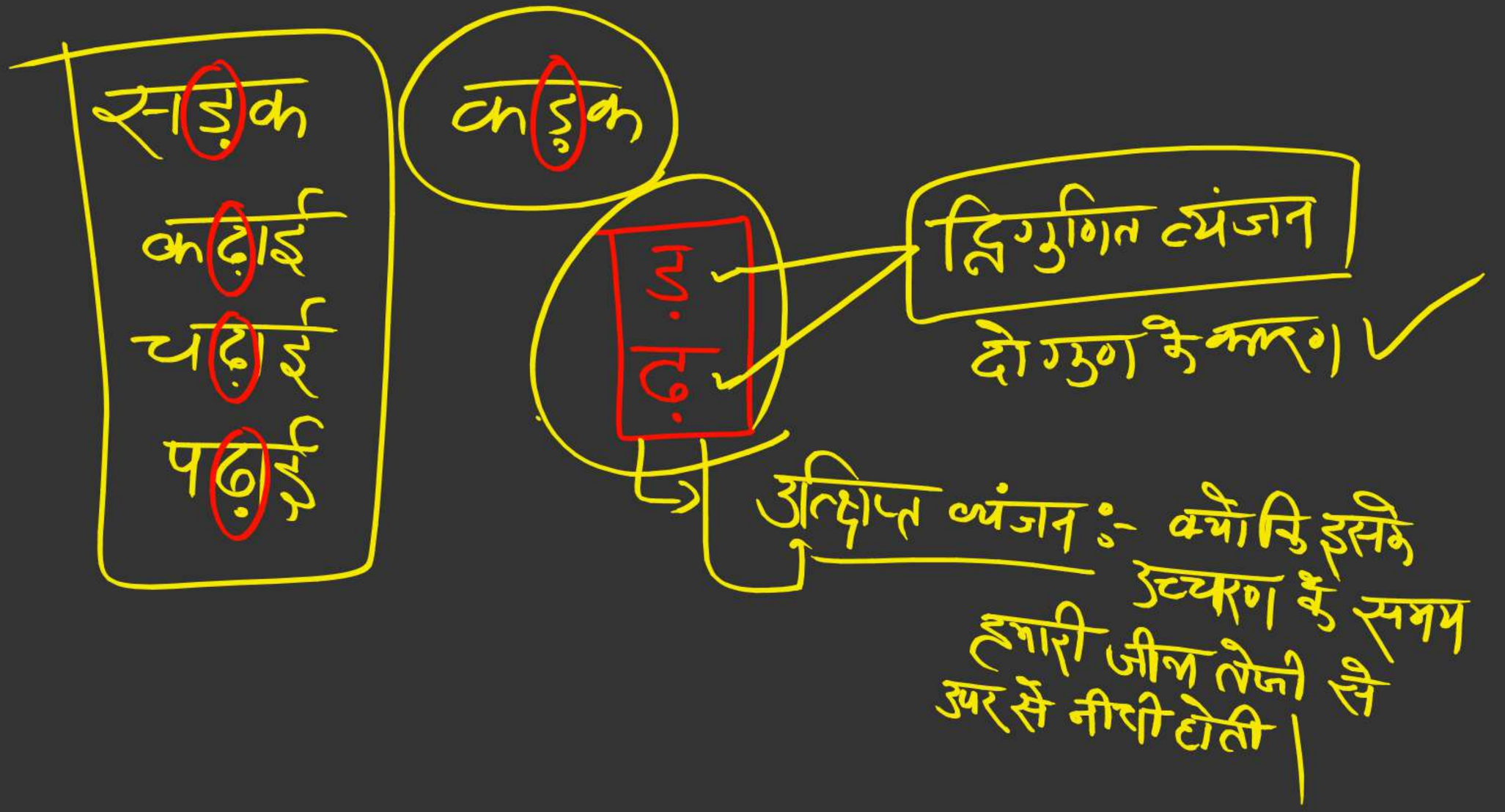

सड़क
कढ़ाई
चढ़ाई
पढ़ाई

कड़क

ड़
ढ़

द्विगुणित व्यंजन

दो गुण के कारण। ✓

उत्क्षिप्त व्यंजन :- क्योंकि इसके उच्चारण के समय हमारी जीभ तेजी से ऊपर से नीचे होती।

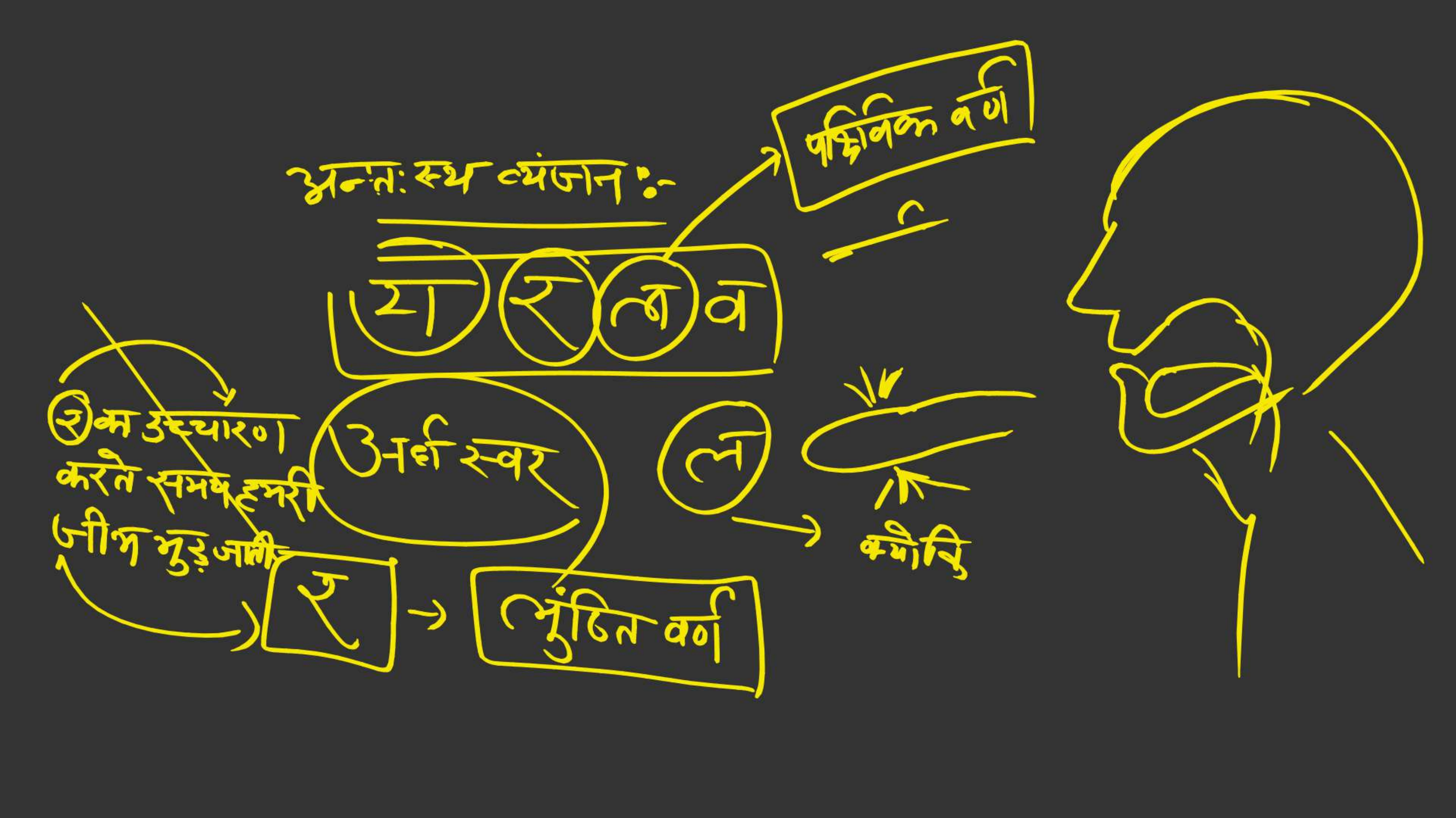

अन्तःस्थ व्यंजन :-

य र ल व

अर्द्ध स्वर

पार्श्विक वर्ण → ल

र का उच्चारण करते समय हमारी जीभ मुड़ जाती

र → लुंठित वर्ण

ल → क्योंकि

स्वर (vowel)

उन ध्वनियों को कहते हैं जो बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता के उच्चारित किये जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण,स्वर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। ग्यारह स्वर के वर्ण : अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए,ऐ,ओ,औ आदि।

=> (ल) => को पार्श्विक ध्वनि के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसके उच्चारण के समय जीभ के दोनों तरफ से वायु बाहर निकल जाती है

=> (ह) => काकल्य वर्ण

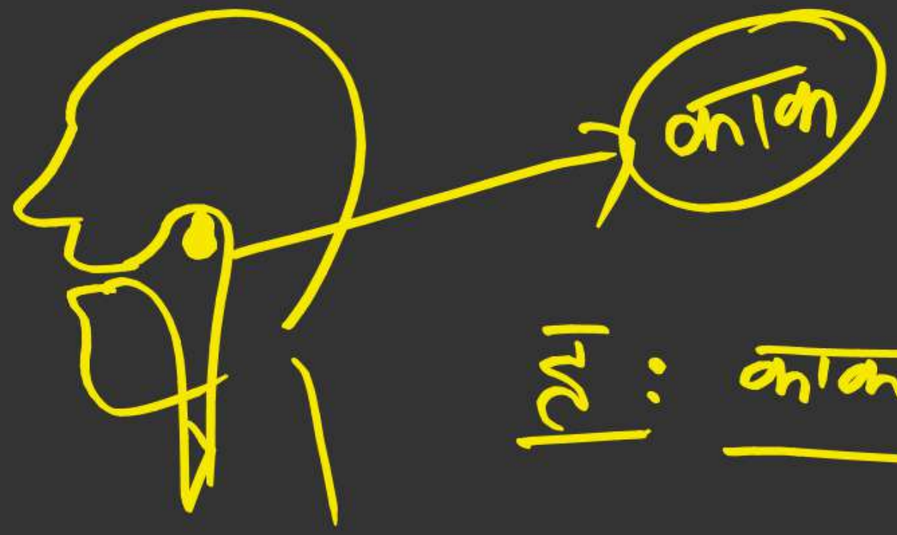

ह : काकल्य ध्वनि :- जब 'ह' का उच्चारण करते समय स्वरतंत्रिकाएँ कम्पित होती हैं और हमारे मुख से हल्की ध्वनि बाहर निकलती है

आयोगवाह किसे कहते है ?

जो व्यंजन ना तो स्वर होते है और न ही व्यंजन उसे ही अयोगवाह कहते है। इनका उच्चारण करते समय स्वर की सहायता लेनी पड़ती है

अर्थात अनुस्वार और अनुनासिक को अयोगवाह कहते है।इनकी संख्या दो है।

उदाहरण- अं ,अः

स्पर्श 27
अन्तःस्थ 4
(31)
+ 4
(35)

(5) ऊष्म व्यंजन
→ (4) श ष स ह

→ इन वर्णों के उच्चारण के समय स्वर तंत्रिकाएं सिकुड़ जाती और वायु घर्षण के साथ बाहर निकलती जिससे थोड़ा गर्म हो जाती है। इसी कारण इसे संघर्षी या ऊष्म वर्ण भी कहा जाता है।

स्वर के 4 भेद

- ह्रस्व स्वर
- दीर्घ स्वर
- संयुक्त दीर्घ स्वर
- प्लुत स्वर

अ / आ + इ / ई = ए

अ / आ + ए = ऐ

अ / आ + उ / ऊ = ओ

अ / आ + ओ = औ

जीभ के आधार पर उच्चारण स्थान

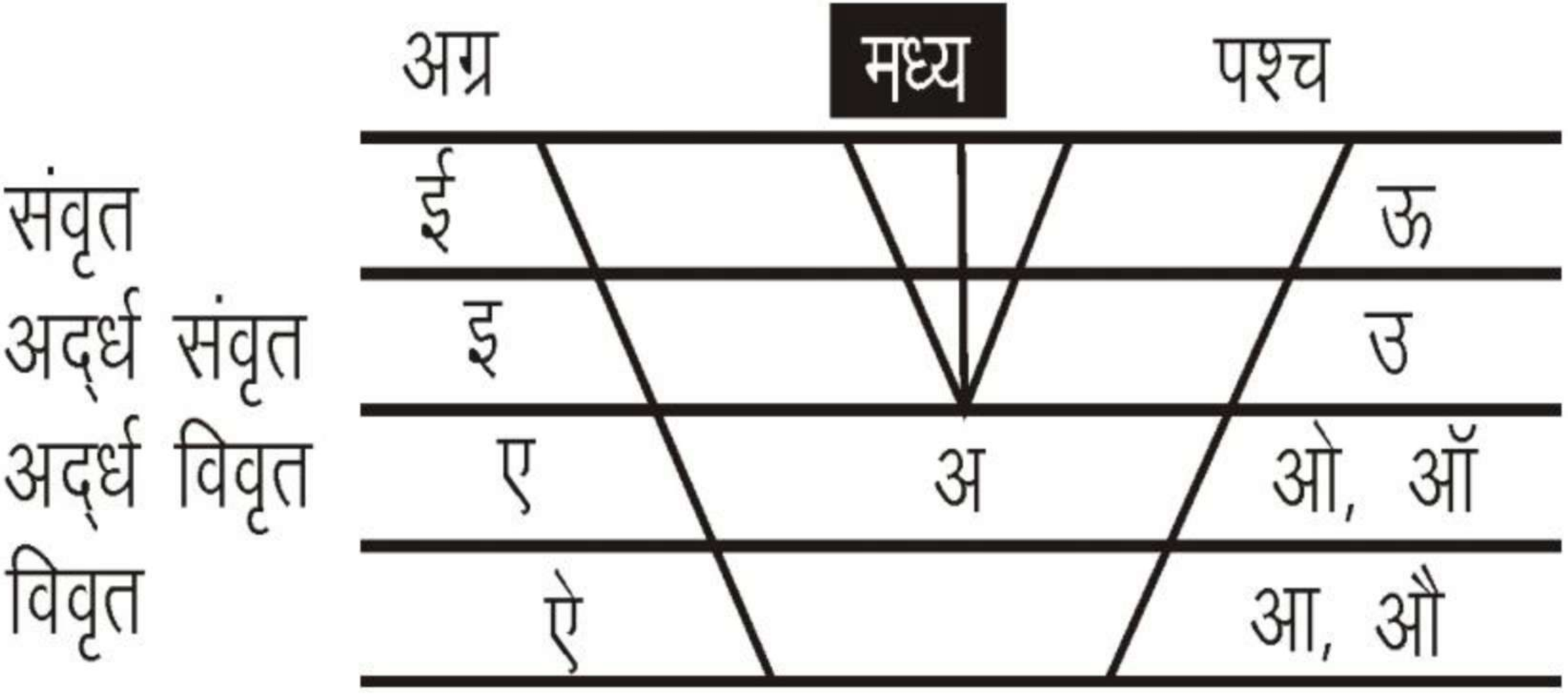

अ	ह्रस्व	कंठ्य	
आ	दीर्घ	कंठ्य	
इ	ह्रस्व	तालव्य	
ई	दीर्घ	तालव्य	
उ	ह्रस्व	ओष्ठ्य	
ऊ	दीर्घ	ओष्ठ्य	
ऋ	ह्रस्व	मूर्धन्य	
ए	दीर्घ	कंठतालव्य	्त
ऐ	दीर्घ	कंठतालव्य	
ओ	दीर्घ	कंठोष्ठ्य	
औ	दीर्घ	कंठोष्ठ्य	

व्यंजन (consonant)

शब्द का प्रयोग वैसी ध्वनियों के लिये किया जाता है जिनके उच्चारण के लिये किसी स्वर की जरुरत होती है। ऐसी ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारे मुख के भीतर किसी न किसी अंग विशेष द्वारा वायु का अवरोध होता है।यह जब हम बोलते है,हमारे जीभ मुह के ऊपर के हिस्से से रगड़कर उष्ण हवा बाहर आता है।

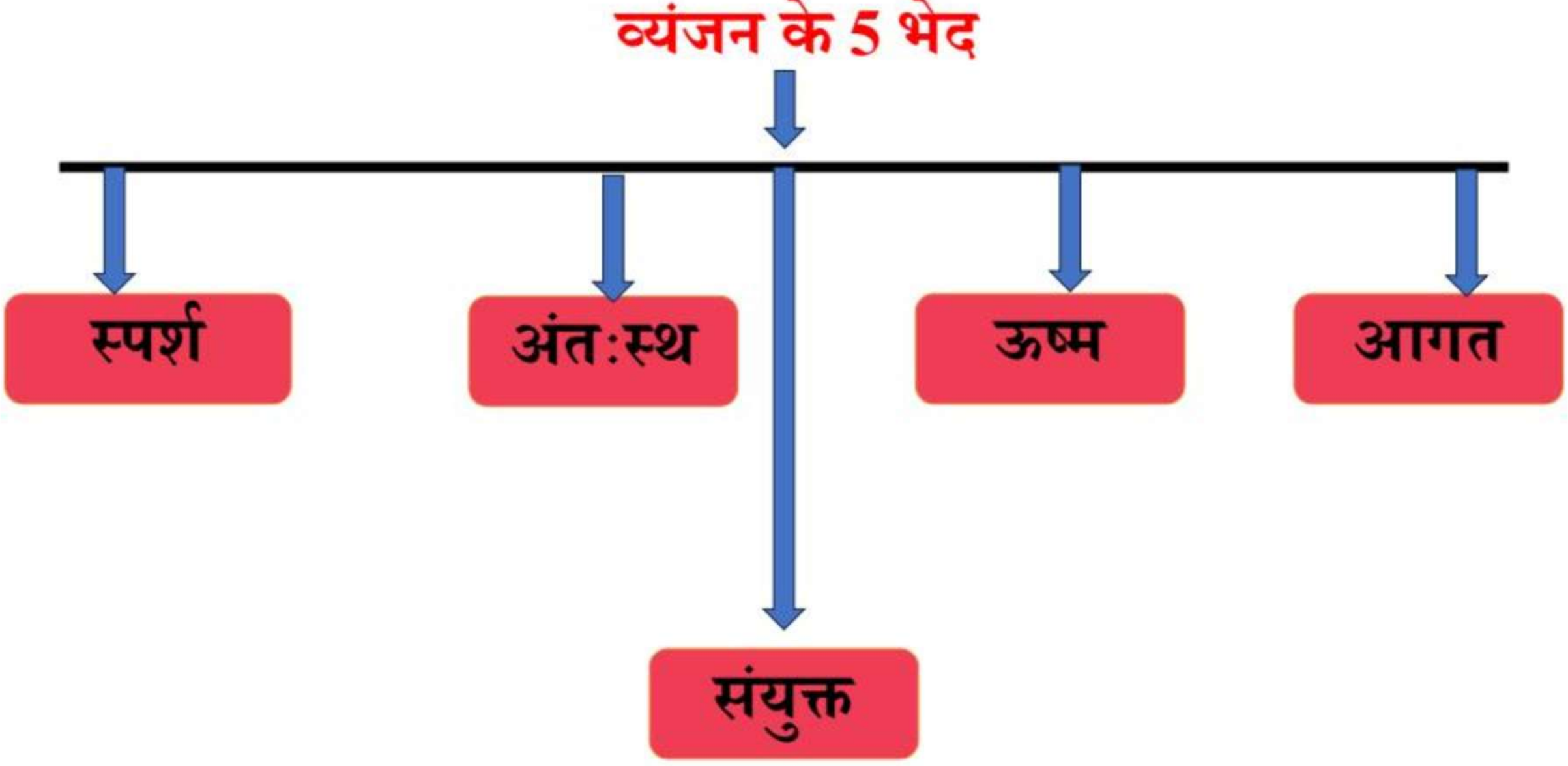
व्यंजन के 5 भेद
स्पर्श
अंत:स्थ
ऊष्म
आगत
संयुक्त

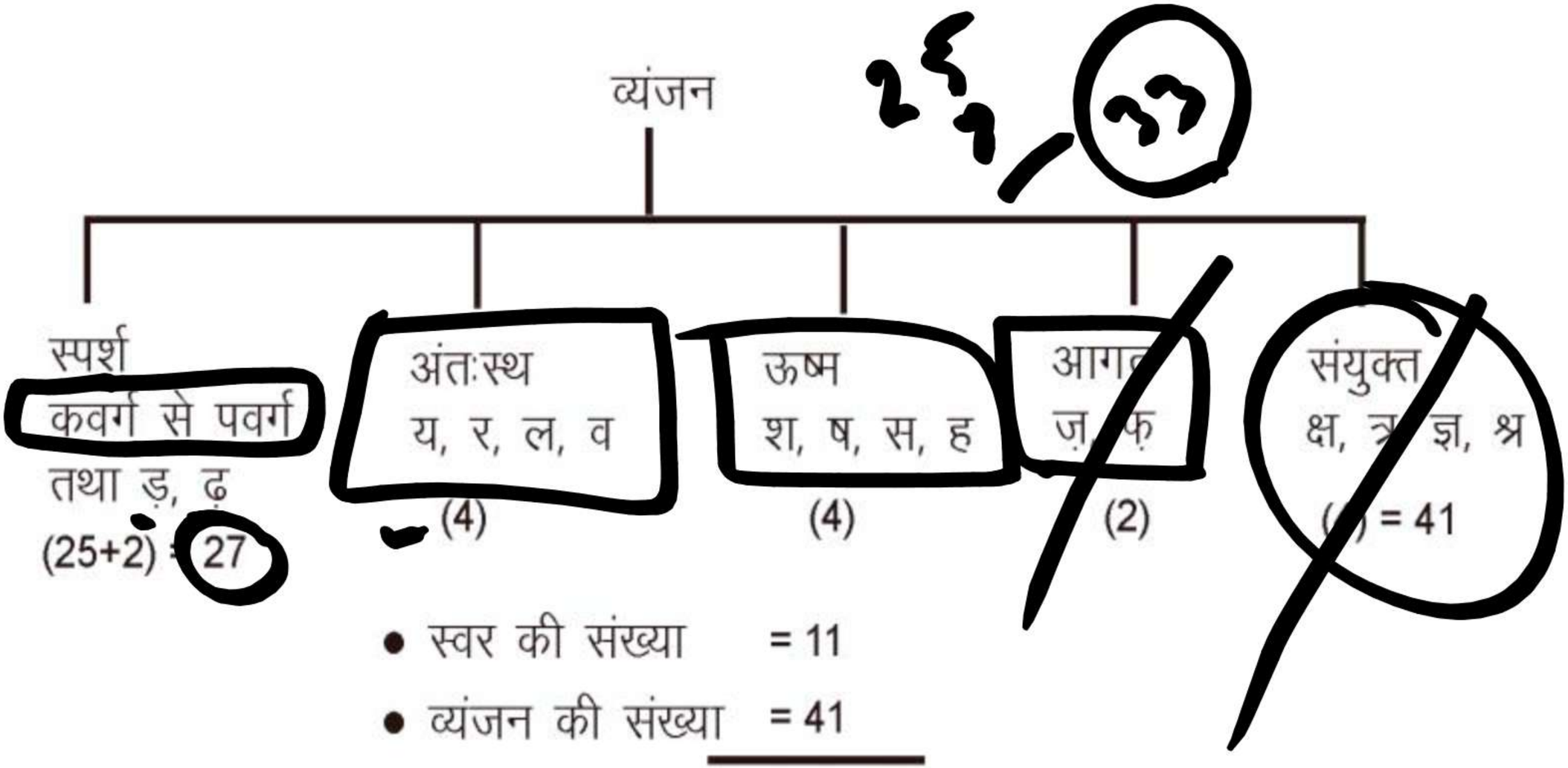

- स्वर की संख्या = 11
- व्यंजन की संख्या = 41

52